ला-इला-ह इल-लल्लाह की बुनियाद

इमादुल उलमा अल्लामा सै0 मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला मुजतहिद

हज़रत इमाम हुसैन (अ0) ने अपनी अज़ीम क़ुर्बानी के ज़रिए से जो कर्बला के मैदान में पेश हुई हक़ को बातिल से पूरी तरह अलग कर दिया। किसी दलील से वह बात हासिल न हुई जो आपके इस अमल से हासिल हुई।

इमाम हुसैन (अ0) ने हक़ के रास्ते में हर वह कोशिश की जो कोई इंसान कर सकता था और हर मुसीबत पर इन्तिहाई बहादुरी के साथ साबित क़दम रहे। आप रसूल (स0) के नवासे थे। हज़रत अली (अ0) के जिगर के टुकड़े और जनाब फातिमा ज़हरा (स0) के नूरे नज़र थे। पैग़म्बरे इस्लाम ने अपने इस नवासे को अपनी ज़बान चुसाकर पाला था और अपनी तरबियत के गोद में परवरिश फरमाई थी। हुसैन अपने नाना की तस्वीर थे। आपके अख़लाक़ और आदतें पैग़म्बरे अकरम का आईना थीं। इस्लाम पर वह वक़्त बहुत मुश्किल था जब उसकी रसूल (स0) के हाथों मक्का में शुरुआत हो रही थी। उस ज़माने में हज़रत सरवरे काएनात (स0) को जिन तकलीफों और मुश्किलों का सामना करना पड़ा वो तारीख़ का एक ख़ूनी बाब है मगर इस्लाम के लिए वह वक़्त भी किसी तरह अपनी दुश्वारी और हौलानाकी में कम अहमियत वाला न था जब रसूले अकरम (स0) की तेईस साल की मेहनत और कोशिश तबाही और बर्बादी के दरवाज़े पर पहुँच चुकी थी। जब इस्लाम की नक़ाब डालकर उसके बदतरीन दुश्मन उसकी जड़ों को खोखला कर रहे थे। जब इस्लामी रूप में लात व उज़्ज़ा के परस्तार तौहीद की बुनियादों को हिला रहे थे जब दरबारे हुकूमत बुराई का अड्डा बन चुका था और यज़ीद की जिन्सी हवस से उसके महारिम भी महफ़ूज़ न थे जब अज़ान की आवाज़ें नाच–गानों और घुंघरुवों की आवाज़ में दब चुकी थीं हिदायत और नसीहत की महफिलों के बजाए शराबों की महफिलें सजी हुई थीं। रसूल (स0) के सहाबियों की बेइज़्ज़ती करना, उनको झुठलाना और उनका ख़ून बहाना जायज़ बना दिया गया था। अहलेबैत की बेइज़्ज़ती की गई और जो उनको सख़्त तकलीफें पहुँचाई गईं वह कभी भुलाइ नहीं जा सकतीं। इन हालात में एक सच्चे ख़ुदा को मानने वाले और पक्के मुसलमान का क्या फर्ज़ था और हक़ के कलमे को बुलन्द करने में उसको क्या करना चाहिए था। क्या ऐसे वक़्त में ख़ामोश बैठे रहना और अपनी जान व माल और अपने घर वालों की हिफाज़त व सलामती को इस्लाम के बाक़ी रहने से आगे रखना इस्लामी नज़रिये से सही था! हर गिज़ नहीं। हुसैन (अ0) ने वही किया जो उनका फर्ज़ था और जो ऐसे नाज़ुक

वक़्त में उनको करना चाहिए था, कूफा के लोगों ने आपके नाम हज़ारों ख़त भेजे थे जिनमें रसूल (स0) के नवासे से दरख्वास्त की गई थी कि वह वहाँ तशरीफ ले जाकर मुसलमानों की हिदायत फरमाएँ और उनको यज़ीद की बुराईयों से नजात दिलाएँ। बड़े–बड़े मशहूर मुसलमानों के ख़तो पर दस्तख़त मौजूद थे जिनमें कुछ रसूल (स0) के सहाबी भी शामिल थे। इन दरख़्वास्तों में यह अलफाज़ मौजूद थेः–

''हमारे लिये यहाँ कोई हिदायत करने वाला मौजूद नहीं है जो हमें सही और ठीक रास्ता दिखा सके आप तशरीफ लाइये। ख़ुदा आपके ज़रिये से हम सबको हिदायत और हक़ पर इकटठा कर देगा।''

इमाम हुसैन (अ0) ने इन सारे ख़तों का जो जवाब दिया था उसमें यह लिखा थाः–

''मैं इस बात को पूरी तरह समझ गया हूँ जो आप लोगों ने लिखी है कि हमारी हिदायत के लिए कोई इमाम और हाकिम मौजूद नहीं है। तो मैं इसके जवाब में अपने भाई और अपने चचा के बेटे और अपने ख़ानदान के एक भरोसे व एतेमाद वाले शख़्स मुस्लिम बिन अक़ील (अ0) को आपके पास भेज रहा हूँ, अगर इन्होंने मुझे लिखा और इसकी ख़बर दी कि आपके बड़े और राय वाले इस मामले में एक हैं और उनमें किसी तरह का इख़्तेलाफ मौजूद नहीं है जैसा कि इन दरख़्वास्तों में आपने ज़ाहिर किया है तो मैं बहुत जल्द वहाँ पहुँच जाऊँगा।''

बेशक इमाम तो सिर्फ वही है जो अल्लाह की किताब के मुताबिक़ हुक्म देता हो, जो अद्ल व इन्साफ और दीने हक़ पर क़ायम हो और सिर्फ़ ख़ुदा की ख़ुशी के लिए ख़ुदा के हर हुक्म का पाबन्द हो।

मक्का के एक बड़े जलसे में अपने इराक़ रवाना होने से एक दिन पहले इमाम हुसैन (अ0) ने जो ख़िताब फ़रमाया था उसमें यह अलफाज़ भी थेः–

''मौत आदम की औलाद के गले का हार है। मुझे अपने बुज़ुर्गों से मिलने का बहुत शौक़ है और यह शौक़ वैसा ही है जैसा याक़ूब (अ0) को यूसुफ (अ0) की मुलाक़ात का था। मेरे लिये वही ख़्वाबगाह पसन्द की गई है जहाँ मैं जाने वाला हूँ जैसे मैं अपने बदन के हिस्सों को देख रहा हूँ जिनको नवावीस और कर्बला के दरमियान वह्शी और ज़ालिम दुश्मन टुकड़े–टुकड़े कर रहे हैं। और अपने इस अमल से अपने ज़ुल्म व सितम की भूख को दूर कर रहे हैं। जिसको तक़दीर के क़लम से लिख दिया गया है उस दिन से किसी को छुटकारा मुमकिन नहीं। जो ख़ुदा की चाहत वही हम अहलेबैते रसूल की मर्ज़ी है हमको मुसीबतों पर सब्र करना है। इसके बाद आप ने फरमायाः जो शख़्स हमारे रास्ते में अपनी जान कुर्बान करना चाहता हो और मौत पर कमर कस चुका हो वह हमारे साथ रवाना हो जाए क्योंकि मैं इन्शाअल्लाह कल सुब्ह कूफा के लिये रवाना हो जाऊँगा।''

इमाम आली मक़ाम ने एक ख़त बसरा वालों के नाम भी लिखा जिसमें लिखा थाः

''मैं आप लोगों को ख़ुदा और उसके रसूल (स0) की तरफ दावत देता हूँ क्योंकि नबी

की सुन्नत अब तबाह हो चुकी है।''

हज़रत इमाम हुसैन (अ0) ने दुनिया की हर राहत को दीन के फैलाने और इस्लाम के बाक़ी रखने के लिए छोड़ दिया था और इस रास्ते में हर चीज़ यहाँ तक कि अपनी महबूब औलाद को भी कुर्बान करने के लिये तैयार थे उनका मक़सद सुधार था और मख़लूक़ की हिदायत। उनके दिल में बादशाहत की हवस न थी वह सलतनत और तख़्त व ताज की ख़्वाहिश न रखते थे अगर उनकी गरज़ दुनिया होती तो वह यज़ीद से इख़्तेलाफ न करते और कुछ शर्तों के साथ उसकी बैअत कर लेते जो बहुत आसान मामला था और इसके नतीजे में इमाम हुसैन (अ0) दुनिया के बहुत से फायदे हासिल हो सकते थे। मगर आपने ख़ुदा के दीन की हिफाज़त के रास्ते में किसी राहत व आराम की परवाह न की और किसी धमकी से न डरे और उस फर्ज़ को पूरा किया जो इस्लाम और दयानत की तरफ से उन पर लाज़िम होता था। आपने अपने छोटे भाई मुहम्मद बिन हनफिया को चलते वक़्त जो वसीयत फरमाई थी, उसमें फरमाया थाः–

''यानी मैं ऐश व आराम की हवस में और ज़ुल्म व फसाद की ख़्वाहिश लेकर यह सफर नहीं कर रहा हूँ बल्कि मेरा मक़सद सिर्फ यह है कि मैं अपने नाना की उम्मत की हिदायत करूँ। उन्हें बुराईयों से मना करूँ और वही तरीक़ा इख़्तियार करूँ जो मेरे नाना हज़रत रिसालतमाब और बाबा अली मुर्तज़ा (अ0) का था और उनकी सीरत पर चलूँ इसके बाद जो मेरी बात को हक़ जानकर क़बूल करेगा तो उसको हिदायत हासिल होगी और जो मेरी बात को रद्द करेगा तो मैं उस पर सब्र करूँगा। यहाँ तक कि ख़ुदा मेरे और उस क़ौम के दरमियान हक़ के साथ फैसला फरमाएगा।''

आशूर की सुब्ह नज़दीक है। शब का हैबतनाक सन्नाटा कर्बला के रेगिस्तान पर छाया हुआ है। बच्चे प्यास और भूख से बेहाल पड़े हैं। अन्सार व अहलेबैत के मुक़द्दस ख़ेमों से तस्बीह व तहलील की आवाज़ें आ रही हैं। इधर इब्ने ज़ियाद की ज़ालिम फौजें इन चन्द नेक इन्सानों को घेरे हुए हैं और इनका ख़ून बहाने के लिये बेचैन हैं। एक तरफ ज़ुल्म का शौक़ है, हुकूमत की ख़्वाहिश है, मुल्क व दौलत की हवस है, नशा व सलतनत का घमण्ड है, दुनिया परस्ती और ख़ुदा को भूल जाना है और दूसरी तरफ शहादत का शौक़ है, ख़िदमत की ख़्वाहिश है, अल्लाह की इबादत व इताअत का जज़्बा है। ख़ुदा परस्ती और दीनदारी है। हर तरफ ख़ामोशी ही ख़ामोशी है। ख़ौफ व दहशत ने फरात के साहिल के हर ज़र्रे को घेर लिया है।

इमाम हुसैन (अ0) इन्सानी ज़मीर को जगा रहे हैंः ऐ मेरे साथियों! ऐ मेरे घर वालों! ऐ मेरे वफादार दोस्तो! इस रात को ग़नीमत समझो! इस अंधेरे और सन्नाटे से फायदा उठाओ! और जहाँ दिल चाहे चले जाओ। मैं तुम्हें अपनी इताअत और बैअत से आज़ाद करता हूँ क्योंकि मेरे दुश्मन मेरी जान के अलावा किसी दूसरे को नहीं चाहते और अगर वह मुझे क़त्ल करने में कामियाब हो गए तो फिर उनको किसी और की फिक्र बाक़ी न रहेगी। इसलिए मेरे अज़ीज़ दोस्तो! तुम अपनी जान क्यों खोते हो अपने रिश्तेदारों और साथियों को क्यों तकलीफ में डालते हो मुझे

अकेला इस रेगिस्तान में छोड़कर जिधर दिल चाहे चले जाओ मैं दुश्मन की तलवार का अकेले मुक़ाबला करूँगा और अगर तुमको यह ख़याल है कि तुम्हें जाते हुए कोई देख लेगा और सबके सामने वापस जाने पर तुमको शर्म आती है तो लो! यह शमा भी बुझाए देता हूँ। अब तो अंधेरा हो गया! हाथ को हाथ नहीं सूझता! कोई किसी को नहीं देख सकता। अपने अज़ीज़ों का हाथ पकड़ो और यहाँ से चले जाओ। दुनिया ऐसे मौक़े पर साथियों को तलाश करती है और लश्कर को बढ़ाती है। मगर इमाम हुसैन (अ0) साथियों को रुख़सत कर रहे हैं और तादाद कम कर रहे हैं। इसलिए कि वह सलतनत और हुकूमत को नहीं चाहते थे, उनकी नज़र दुनिया की चाहत पर न थी। वह दीन चाहते थे वह हक़ को बातिल से अलग करना चाहते थे और इसीलिए साथियों की उस बड़ी तादाद को नहीं चाहते थे जिसमें ईमान न हो ऐसे बहुत बड़े लश्कर की उनको चाहत न थी जिसके दिल में ख़ुदा का ख़ौफ न हो और जो आख़रत व हिसाब के दिन (क़यामत) पर यक़ीन न रखता हो। वह चाहते थे कि जो मैदाने शहादत में जाए वह दयानत और हक़ के सच्चे और पाक जज़्बे को लेकर जाए वह सच्चे और पक्के दीनदारों को चाहते थे चाहे उनकी तादाद कितनी ही थोड़ी हो यहाँ तक कि वह इस पर भी तैयार थे कि उनके तमाम साथी उन्हें अकेला छोड़कर चले जाएँ। मगर वह ऐसे साथी अपने साथ नहीं रखना चाहते थे जो किसी क़ीमत पर भी ख़रीदे जा सकते हों। इमाम का यह जोश भरा बयान सुनकर अन्सार और क़रीबी लोगों ने चीख़ें मारकर रोना शुरु कर दिया। और हर एक कहने लगाः रसलू (स0) की यादगार! फातिमा (स0) के बेटे! हमें आख़िर किस दिन के लिए अल्लाह ने पैदा किया है। सैकड़ों बार हमें क़त्ल किया जाए और फिर ज़िन्दगी मिले जब भी हम हर बार हुज़ूर के सामने शहादत की इज़्ज़त हासिल करेंगे और कभी इस ख़िदमत से मुँह नहीं मोड़ेंगे। इमाम (अ0) ने दुनिया को दिखाया कि उनके साथी कैसे वफादार थे, कैसे सच्चे थे और कैसे ख़ुदा तरस थेः

''मैंने ऐसे वफादार साथी नहीं देखे जैसे मेरे साथी हैं।''

आपका मशहूर शेर हैः

अलमौतु औला मिन रुकूबिलआरि
वल आरु औला मिन दुख़ूलिन्नारि

''बेइज़्ज़ती बर्दाश्त करने से मौत बेहतर है। और जहन्नम की आग में जाने से दुनिया की बेइज़्ज़ती और ज़लालत बर्दाश्त कर लेना अफज़ल है।''

इमाम हुसैन (अ0) ने हमको इन्सान के सर की क़ीमत बताई है। उन्होंने हमको एहसासे बरतरी के तरीक़े सिखाए हैं। इन्सानियत की तारीख़ में एक कभी न ख़त्म होने वाली जगह दी है। उसूल व क़ाएदे के क़ानून समझाए हैं। उन्होंने इन्सानी ज़मीर से मौत और क़ैद का ख़ौफ हमेशा के लिये दूर कर दिया और अपने अमल से दिखा दिया कि दयानत और हक़ की हिफाज़त के लिए बड़ी से बड़ी हुकूमत से टक्कर क्योंकर ली जाती है।

''सर दाद न दाद दस्त दर दस्ते यज़ीद
हक़्क़ा कि बिनाए ला इलाह अस्त हुसैन

(ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रह0)

